सत्य की महक

श्री दादा जी

पुस्तक प्राप्ति के पते:

श्री सी० आनन्द
170, सैक्टर 11-ए,
चण्डीगढ़-भारत
पिन-160011

प्रो० ओ० पी० पुरी
3014, सैक्टर 44-डी,
चण्डीगढ़-भारत
पिन-160022

तीसरी आवृत्ति—1987

प्रकाशक :
ओमप्रकाश पुरी
भूतपूर्व प्राध्यापक पंजाब इंजनियरिंग कालेज,
चण्डीगढ़-भारत ।

मुद्रक :
निर्मल प्रिंटरज
2357, सैक्टर 23-सी,
चण्डीगढ़-160023
भारत ।

सत्य की महक

श्री दादा जी वचनामृत

श्री श्री सत्यनारायण

वन्दना

प्रभु श्री सत्य नारायण को प्रणाम।

उस नित्य, अक्षर उदगीथ को प्रमाम जो अपने परम सत्य स्वरूप को भक्त के लिए प्रकटाता है।

घट घट वासी उस अन्तरयामी को प्रणाम जो प्रत्येक के हृदय में स्थित हो कर हर समय प्रेम-निमन्त्रण देता है।

उस दिव्य प्रेम-पुंज को शतशः प्रणाम जो दिव्य प्रेम की अविरल धाराओं से हृदय को आह्लादित कर देता है।

उस परम-सुहृद के सहवास में हम वह ही हो जायें जो वह है।

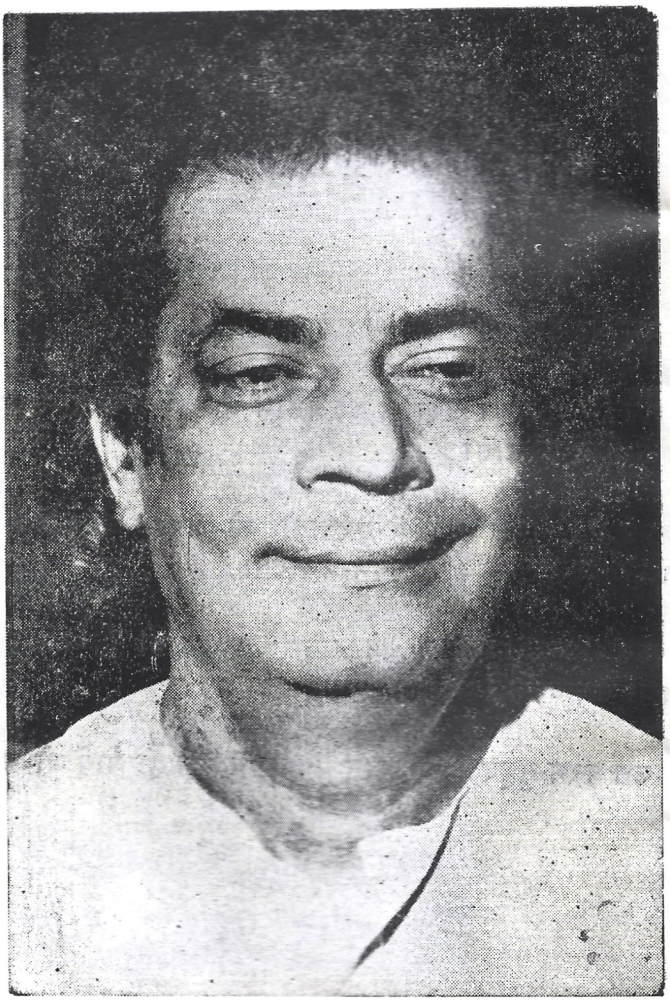

श्री दादा जी

समर्पण

सत्य के मूर्त-स्वरूप, कृपा-सिंधु, प्रेम-पुंज श्री दादा जी अपनी अहैतुकी कृपा से आज हमारे मध्य विद्यमान हैं। भू-भाग भारत उनके अस्तित्व से अपनी ऋषि-परम्परा को उजागर कर रहा है। उनकी लीला उसकी लीला है और उनका खेल उस का ही खेल।

उस अच्युत दिव्य आत्मा का साक्षात्कार रोमाँचकारी भी है और मर्मस्पर्शी भी। अपनी मीठी मुस्कान, सरल भाव-व्यंजना एवं प्रेम-पूर्ण दृष्टि से वह दर्शक के हृदय को छू लेते हैं। दिव्य आनन्द अनुभूति उन के सान्निध्य में अनायास ही हो जाती है।

उन का सन्देश धर्म को अपने शुद्ध स्वरूप में देखने का है जिस से प्राणी मात्र अपनी एकता को उस आत्मा की एकता में देखें। दादा जी कहते हैं, "सब प्राणी एक हैं। सब एक ही भाषा से युक्त हैं। उस हृदय की भाषा से उस सत्य को आराधो। आनन्द को भोगो और अपने नियत सांसारिक कार्यों को करो"।

उस दिव्य अस्तित्व से जिन उदगारों का प्रादुर्भाव हुआ, उन का हिन्दी रूपान्तर उन परम सत्य के द्योतक कृपा-सिंधु को ही सादर समर्पित है।

प्रस्तावना

प्रस्तुत पुस्तक श्री दादा जी की अमृत सूक्तियों का संग्रह मात्र है। इस से पूर्व संग्रह की दो आवृत्तियाँ छप चुकी है। यह तीसरी आवृत्ति है।

सत्य के मुख पर पड़े हुए सुनहरी परदे को हटा देने से जो शुद्ध एवं प्रखर रूप प्रकट होता है वही आप को श्री दादा जी की सूक्तियों से मिलेगा। मत-मतान्तर के झाड़-झंखाड़ रीति-रिवाजों की उलझाहट और हृदय की कृत्रमता से नितान्त अलग श्री दादा जी के यह उद्गार सरल हृदय से प्रस्फुटित सत्य के वह दिव्य स्रोत हैं जिन से आनन्द सुधा की अविरल धारायें निरन्तर बहती रहती हैं।

आइये, इस आनन्द सुधा का पान हम भी करें।

ओमप्रकाश पुरी
3014, सैक्टर 44-डी,
चण्डीगढ़-160022

5-10-1987

महत् सङ्गस्तु दुर्लभोऽगम्योऽमोघश्च ।
(नारद भक्ति सूत्र 39)

महापुरुषों का सङ्ग दुर्लभ, अगम्य और अमोघ है अर्थात

"सच्चे सत्पुरुष सहज में मिलते नहीं, मिलने पर पहचाने नहीं जाते, तो भी इनका सङ्ग कभी व्यर्थ नहीं जाता ।"

श्री दादा जी

परिचय

श्री दादा जी का वास्तविक नाम अमिय राय चौधरी है। प्यार एवं सत्कार से सभी उन्हें दादा जी कह कर पुकारते हैं। बंगाल में दादा शब्द ज्येष्ठ भ्राता के लिए प्रयोग होता है और 'जी' आदर सूचक है। अतः 'दादा जी' का हिन्दी अर्थ हुआ 'बड़े भाई'। वह न कोई गेरवा वस्त्रधारी साधु है और न महन्त। वह एक गृहस्थी हैं और लगभग छियासी वर्ष की आयु में युवा-शक्ति के द्योतक हैं। वह अपने नाम के साथ 'महामण्डलेश्वर' आदि कोई सूचक नहीं जोड़ते। वे निस्सन्देह सब से अलग सत्य के जीवित रूप में हमारे मध्य विद्यमान हैं। उन की मस्ती उस की मस्ती है और उनके कार्य उस परम सत्य के खेल व उस की लीला मात्र।

विचित्रतायें व कुछ विचार

और यह आश्चर्य की बात है कि दूसरे साधुओं, महन्तों, गुरुओं से अलग दादा जी अपने को और कुछ कहलाना पसन्द नहीं करते। उन का कहना है कि सभी एक ही डगर के राही हैं। एकरूप हैं। कोई थोड़ा आगे है और कोई पीछे। किसी भी समय कोई भी उस नित्य शाश्वत सत्य को पा सकता है अथवा अपने को पहचान सकता है कि वह उस नित्य के बिना कुछ भी नहीं। नानाविधता का भान एकत्व को न जानने से ही है।

सब का गुरु केवल ईश्वर

श्री दादा जी कहते हैं कि सब का गुरु प्रत्येक में सदा से विद्यमान है। बाहर के आडम्बरी गुरु जो धन के बदले भगवान से मिला देने का लोभ दे कर हज़ारों रुपये ठग लेते हैं केवल स्वार्थपूर्ति ही करते हैं। दादा जी कहते हैं कि अन्दर के गुरु की आवाज़ को सुनो। वह गुरु चिरकाल से

तुम्हारे लिए तुम्हारे हृदय में गुरु-मन्त्र का उच्चारण कर रहा है। उस स्पन्दन की ताल से अपनी ताल जोड़ दो। वह जो आकर्षण करता हुआ, गरजता हुआ, कृष्ण के रूप में हृदयों के व्रज में विद्यमान है उसे अनन्य भक्ति-धारा से राधा के रूप में धारण कर लो। यही व्रज लीला है। बाहर का व्रज चिन्ह मात्र है, वास्तविक नहीं।

सच्चे आश्रम को जानो

वे कहते है इस शरीर को ही आश्रम समझो, जिस में यह जीवात्मा श्रम करता है और विश्राम करता है। अथवा इस समस्त ब्राह्माण्ड को ही आश्रम समझो जिस में ब्रह्म अनन्त श्रमों के साथ प्रकट हो रहा है। इस आश्रम से अलग ईंट, पत्थर, गारे और सीमेंन्ट के आश्रम उड़ान में बन्धन के ही हेतु हैं, सहायक नहीं।

और जानो सच्चे सन्यास को

दादा जी कहते हैं सच्चा त्याग अहम् का त्याग है। अथवा विभेदक आस्था का त्याग है। घर बार त्याग कर बनों और पर्वतों में घूमने से सन्यास नहीं होता। अहंकार और ममाकार को त्याग कर ही सन्यास होता है। नहीं तो वनों में भी ममता की विभेदक दीवार राग और द्वेष रुपी द्वन्दों को जन्म दे देती है।

और सच्ची तपस्या को भी

और, तपस्या शरीर को सुखाने अथवा कष्ट देने का नाम नहीं। वह तो उस ब्रह्म में-शाश्वत सत्य में अपनी पूर्ण आस्था रखते हुये कर्मक्षय का मार्ग है। जो अपने को भगवद् इच्छा पर स्थित रखकर, सुखद एवं दुखद दोनों प्रकार के भोगों द्वारा कर्मक्षय करता है, वही सच्चा तपस्वी है। अंगारों पर चलने वाला, शूलों पर सोने वाला पर उक्त भावना से हीन व्यक्ति कदापि तपस्वी नहीं हो सकता।

तुम ही पूर्ण कुम्भ हो, तनिक सोचो

यही नही, दादा जी कहते हैं कि तुम ही वह कुम्भ (घड़ा) हो जिस में वह पूर्णतया समाया हुआ है। उस को विद्यमानता में कोई विरल नहीं, कोई छूट नहीं। इस कुम्भ में ही उस पूर्ण का पूर्णता से भान करो।

ज़ोर से नहीं, नित्यता की दृष्टि से

इन्द्रियों को विषयों से ज़बरदस्ती मत छुड़ाओ, नहीं तो वह भावनाओं के आवेश के रुक जाने से अन्धा-धुन्ध मार्ग में अग्रसर हो कर विनाश का कारण बन जाती है। इन्द्रियों से विषयों को अहम् का त्याग कर के भोगो। बुद्धि द्वारा अनित्यता को देखो और एक ही अक्षर के सब रूप जानो। टेक उस पर रखो। फिर भोग-बुद्धि योग-बुद्धि में परिणत हो जायेगी। झूठे, आडम्बरी, तामसी सिद्धियों में लीन पुरूष उस तक कैसे पहुंच सकते हैं ?

जियो, पर दृष्टि मन के साम्राज्य से परे

और जीवन की यात्रा को मन के साम्राज्य से परे रहते हुये बिताओ। दादा जी कहते है वह नित्य, अक्षर ब्रह्म अच्छाई-बुराई, सर्दी गर्मी, दुख-सुख सब द्वन्दों से परे गुणातीत है। उसकी पूजा जीव-भाव के रहते केवल फल फूलों से कैसे हो सकती है ? उस पूजा के लिये तो तुम वह ही हो जाओ।

विज्ञान का अतिक्रमण

एक विलक्षण बात दादा जी के सान्निध्य में प्रायः देखी जाती है। किन्हीं क्षणों में दादा जी अपने सत्य-पथ गामी प्रिय जीव के लिए अद्भुत घटनाओं को प्रकटाने में सहायक होते है। यह घटनायें विज्ञान के जाने पहचाने नियमों का अतिक्रमण करती जान पड़ती है। जैसे, दादा जी के शरीर क भिन्न भागों से भिन्न-भिन्न सुगन्धों का आना, जल में श्वेत अमृत कण रुपी धारा का आ जाना, किसी भी भाषा में सादे कागज़ पर महानाम का स्वयमेव प्रकट होना और फिर लय होना आदि, आदि। परन्तु दादा जी इन विलक्षण घटनाओं को कोई अधिमान नहीं देते और न ही उन के घटने पर कोई श्रेय ही वह

अपने लिये लेते हैं। वे कहते है शरीरधारी दादा जी कुछ नहीं करते। वह परम सत्य ही अपने को दर्शाने, लीलामय हो कर, कुछ प्रकटाता है। इस की सुध दादा जी को नहीं।

इन पंक्तियों के लेखक को प्रेम से शराबोर श्री दादा जी ने अपना पुत्र कहा अर्थात सत्य का पुत्र। उन की समीपता अजीब है। अश्रुधारा का न रुकने वाला प्रवाह उन के सान्निध्य में एक स्वाभाविक क्रिया है।

श्री दादा जी के इस प्रेम से खिचे मैंने कई चमत्कारक घटनायें 25 जनवरी, 1977 को चण्डीगढ़ में श्री गुरदयाल सिंह जी (161, सैक्टर 11-ए,) के गृह पर देखीं। हाथ के इंगित से ज़ोरदार वर्षा उन्होंने बन्द कर दी। श्री एस. के. सचदेव, प्रिंसीपल पंजाब इजनियरिंग कालेज (अब सेवा-निवृत) को सुनहरी सत्यनारायण प्रतिमा-अंकित एक लाकेट शून्य में से उत्पन्न किया। फिर मेरे और अन्य गन्य-मान्य व्यक्तियों के सम्मुख लाकेट की पृष्ठ पर अंग्रेजी में श्री सत्यनारायण दृष्टि मात्र से लिख देना, आदि कई घटनायें विज्ञान के जाने माने नियमों की उल्लंघना हैं।

ऐसी प्रत्येक घटना के उपरान्त श्री दादा जी ने मेरे से पूछा कि विज्ञान से इसे कैसे समझाओगे ?

प्रकटतः विज्ञान के जाने नियम इन को समझाने में अक्षम हैं।

ऐसी घटनायें न कोई सम्मोहन क्रिया हैं और न मन का भ्रांति-दर्शन क्योंकि लाकेट, अमृतकण आदि अब भी विद्यमान हैं और देखे जा सकते हैं।

श्री दादा जी जिस को बुलाते हैं—पवित्र को, निस्वार्थी को और कभी कभी ब्रह्मानुभवी को भी—वह आ जाता है। उन से खिचे अमर तपस्वी, भारत वीर शिरोमणि श्री जय प्रकाश जी व उन की धर्मपत्नी श्रीमति प्रभा जी ने उन की कृपा से महानाम को देखा व सुना। श्री जगजीवन राम व अन्य कई मेधावी राजनीतिज्ञ उनके दर्शन कर चुके हैं।

ऐसी दिव्य ज्योति अपनी अद्वितीय छटा से भू-भाग भारत में देदीप्यमान है। उस ज्योति द्वारा प्रसारित अमर रश्मियाँ वचनामृत सूक्तियों के रूप में आगे के पृष्ठों में दी हैं।

पढ़िये और आनन्द विभोर हो जाईये।

—ओम

अमृत सूक्तियां

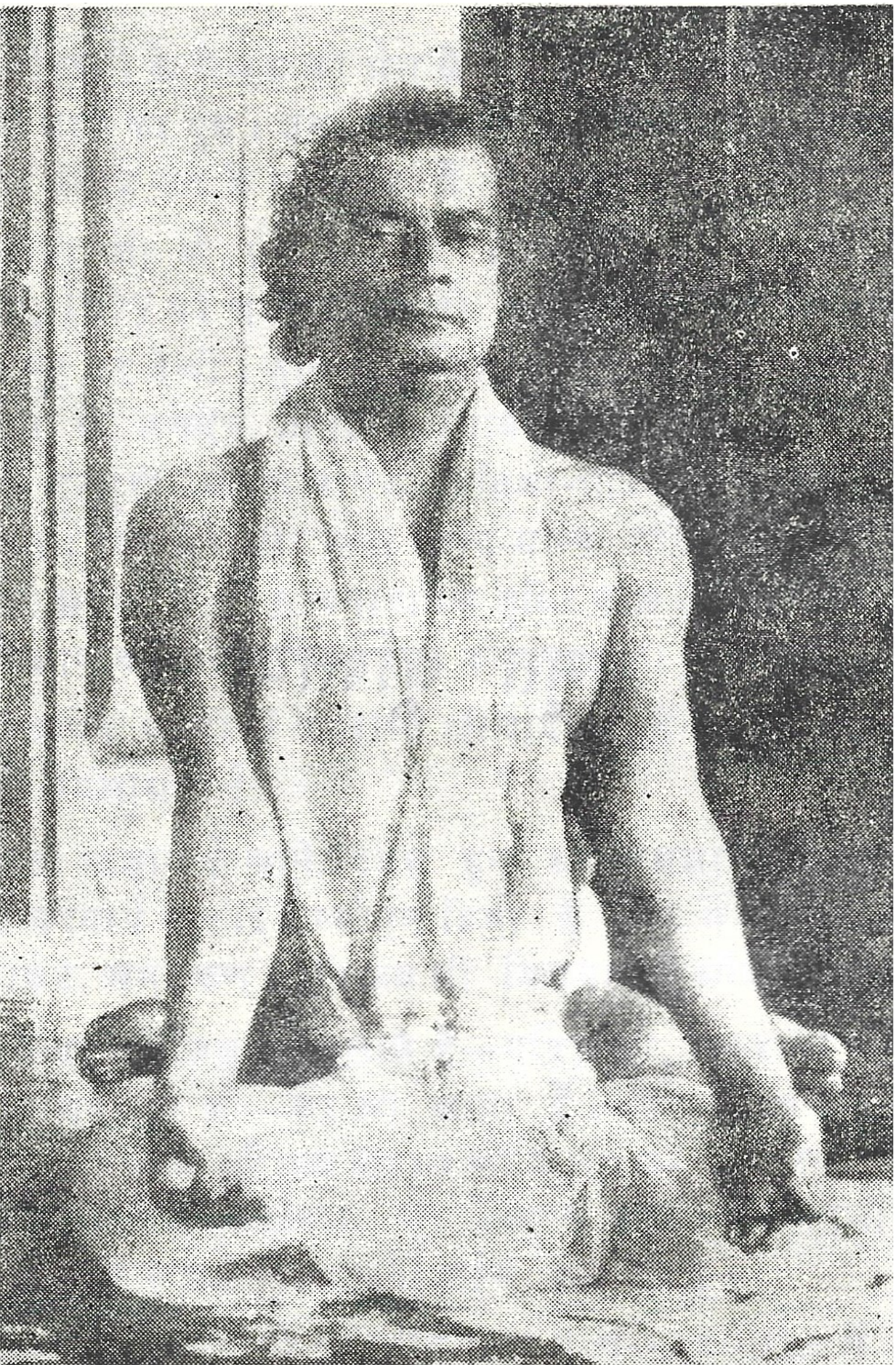

१ वह परमात्मा सब से प्यारा है,
सब से समीप,
और उस को पाने का मार्ग सब से सरल।

□

२ चिन्ता न करो,
क्योंकि चिन्ता से तुम में कर्ता होने का अभिमान आ जाता है।

□

३ और किसी वस्तु के पीछे मत भागो,
केवल उसे ढूँढो।

□

४ याद रखो, पदार्थों के पीछे भागने से आत्म-अनुभूति अथवा परमात्म-प्राप्ति नहीं हो सकती।

□

५ मत भूलो,
कि हम परस्पर अलग नहीं हो सकते।

□

६ मैं तुम्हारे में हूं,
और तुम मेरे में।
मत भूलो, कि हम दोनों
उस ब्रह्म में स्थित हैं
फिर भला अलगाव कैसा ?

७ कोई प्राणी किसी का गुरु नहीं हो सकता।
हर एक का गुरु उस के अन्दर स्थित वह भगवान ही है।

□

८ कुछ न चाहो तो सब मिलता है
क्योंकि उसको पाने से सब प्राप्त हो जाता है।
ज़रा सोचो, सब वस्तुओं का संग्रह किया,
पर उस को न पाया।
तो फिर तुम ने कुछ भी नहीं पाया!

□

९ जो कहते हैं कि वे तुम्हें भगवान तक ले चलते हैं,
सत्य नहीं कहते।

□

१० तुम भगवान को पाने के धन्धे में तो रहो,
पर भगवान को जीविका का धन्धा न बनाओ।

□

११ भक्ति, ध्यान, एकान्त और वैराग्य का दिखावा
अहंकार का ही द्योतक है।

□

१२ केवल उस का स्मरण करो, और अपने कर्त्तव्य का पालन,
और फिर आनन्द में रहो।

१३ उस भगवान का स्मरण ही सार वस्तु है,
और सब तो पथ-भ्रष्टक मारीचकायें ही हैं
उस को पाने के लिए
केवल एक चीज़-नाम स्मरण-ही चाहिये।

□

१४ योग, भजन, ध्यान भी कभी मार्ग की बाधा हो सकते हैं।
सावधान रहो,
हर एक की बात मत मानो।

□

१५ यदि तुम भगवान को केवल एक ही देवी अथवा
देवता के रूप में ही समझते हो, तो तुम अपने चारों ओर
माया अथवा भ्रांति के बन्धन को ही कसते हो।

□

१६ भगवान इन्द्रिय-सुख और सामाजिक वस्तुओं की कामना
की पूर्ति नहीं करता, वह तो कामना को हटा देता है।

□

१७ उस को पाने के लिए गुरुओं, योगियों,
बाबाओं और सन्तों के पीछे-पीछे मत भागो,
उस से मिलन तो अपने अन्दर झांकने से ही होगा।
सो, अपने ही अन्दर देखो।

१८ शरीर का इस समय का ठहराव अस्थाई है।
याद रखो, हम नाटक के पात्र मात्र हैं,
और हमारा पारिश्रमिक
हमारी दक्षता पर ही निर्भर है।

□

१९ भगवान कहता है, "मुझे समझने की चेष्टा मत करो,
मुझे याद रखो और भजो"।

□

२० भगवद नाम-स्मरण ही योग है,
उसे याद रखो और भजो,
तुम्हारे लिए इतना ही काफी है।

□

२१ नाम-भजन के अतिरिक्त और सब रास्ते
केवल मन के साम्राज्य में दौड़ ही हैं।

□

२२ तुम बुद्धि से भगवान को नहीं जान सकते,
उस की अनुभूति तो आत्मा से ही होती है।

□

२३ भगवद-रुपी सत्य के मार्ग की बुद्धि-रुपी बाधा को हटा दो,
क्योंकि
प्रश्न और उत्तर दोनों में अशुद्धि भरी है।

२४ बाहर के चिन्ह अन्दर के सत्य के ही द्योतक हैं।
उस तक पहुंचने के लिए,
इन चिन्हों को भी हटा दो।

□

२५ उस का नाम ही तुम्हारा सच्चा अस्तित्व
और तुम स्वयं उस के एक मन्दिर।

□

२६ तुम कुछ पाने और खाने में मत रहो,
केवल नाम जपो,
सब अपने आप ठीक हो जाएगा।

□

२७ जीवन-कला न केवल निषेध है और न विहित विधान,
वह तो दोनों ही रूप रख कर रचनात्मक
फलों को देने वाली है।

□

२८ सत्य अपने को प्रेम के रूप में प्रकट करता है।

□

२९ सत्य ही तुम्हारा एकमात्र साथी है,
यहां भी,
और इस जीवन के बाद भी।

३० सत्य के स्मरण और उसके प्रेम की अनुभूति में किसी मानसिक एवं शारीरिक मोड़-तोड़ की आवश्यकता नहीं।

□

३१ जो कर्तव्य कर्म तुम्हें सौंपे गये हैं,
उन्हें पूरी लगन और श्रद्धा से
उस की मरज़ी समझ कर करो।

□

३२ अपना दैनिक कार्य करते हुए सरल
हृदय से महानाम को उचारो।
शेष तो उस पर ही छोड़ दो, वही
कर्ता है, तुम नहीं।

□

३३ भगवान तो तुम्हारे हृदय का स्पन्दन
है। दिन रात २४ घंटे वह तुम से
प्रेम जताता है।

□

३४ जब वह भगवान रुपी स्पन्दन शरीर
से विदा लेता है
तो यह शरीर किसी काम का नहीं रहता।

३५ यदि तुम भगवद भक्त हो,
तो तुम्हें सब कुछ मिल सकता है,
उस समय तक जब तक वह तुम्हें देना चाहे।
यही भगवद-कृपा है।
यदि तुम भगवद भक्त नहीं,
तो तुम्हें वह सब कुछ मिल सकता है
जो तुम चाहो, भले ही वह तुम्हारे लिए
हितकर हो व अहितकर।

□

३६ परमात्मा का नाम सदैव तुम्हारे अन्दर उच्चरित
होता है, परन्तु तुम उसे सुन नहीं पाते।

□

३७ भगवान के मार्ग में सदैव सावधान रहो।

□

३८ तुम भगवान को मूर्ख नहीं बना सकते।
कई बार वह तुम्हें इस भावना के रखने से रोकता नहीं।
पर याद रखो ऐसी भावना से वास्तव में तुम स्वयं
ही मूर्ख बनते हो, वह नहीं।

□

३९ दुख अहम्-भावना का ही भाग है।
अहंकार से परे दुख का कोई अस्तित्व नहीं।

४० सच्ची आराधना में आराध्य और
आराधक एक हो जाते हैं।
जब तुम उस को जान जाते हो तो वह आ कर
तुम्हें अपने रूप में आराधता है।

□

४१ भगवान से प्यार करने का सब से
सरल मार्ग है– नाम स्मरण।

□

४२ भगवान को अपने हृदय से उठाओ
और मन–रूपी भवन का वासी बना दो।

□

४३ कर्म ही भगवान बन जाता है यदि
तुम कर्म के शांत दर्शक ही रहो
और कर्म को अपने आप होने दो।

□

४४ ऊंची अवस्थाओं में तुम्हारी उड़ान के
समय का निश्चय वह भगवान ही करता है।

४५ भगवान तक पहुंचने के समतल मार्ग
पर चलने के अतिरिक्त भला और किस सफलता की
आवश्यकता है ? और फिर चाहे मार्ग भी न हो और
न कोई चीज़ ही पास हो
हमें केवल उसी का साथ चाहिए।

□

४६ भगवान का कोई शत्रु नहीं।

□

४७ उस को जानना है तो बाहर दिखावे के
धार्मिक आडम्बरों को छोड़ दो।

□

४८ क्या भगवान मेरे में है
या कि मैं भगवान में हूँ ?
अब तो भगवान से ऐसा भर गया हूं कि
पहचान ही मुश्किल हो गई है।

□

४९ हृदय और मन से उस पर भरोसा रखो,
अपनी तुच्छ समझ का आसरा मत लो।

५० कार्यों की बुद्धि द्वारा औचित्य-सिद्धता अन्तः
करण की ऐसी प्रक्रिया है कि तुम झूठ भी
बोलो और धोखा भी दे दो, पर अपने को
दोषी न ठहराओ।

□

५१ आज के दिखाये जा रहे भगवद प्राप्ति के
मार्ग तो निरा धोखा हैं अथवा कोरा मनोविनोद।

□

५२ तुम्हारे कान में मन्त्र नहीं फूँका जा सकता
कोई मनुष्य तुम्हारी भगवान से जान
पहचान नहीं करवा सकता। ऐसा कहना
अयथार्थ है और ऐसा कार्य धोखे की लूट।

□

५३ तुम कोई मार्ग की कड़ी नहीं हो।
तुम उस के नाम से ही उस के नाम और
प्रेम को ले कर ही आये हो।

□

५४ मैं उस के साथ आया हूं।
और वह मेरे साथ आया है।
मैं तो कोई मार्ग-दर्शक भी नहीं।

५५ मन्दिरों और आश्रमों की क्या आवश्यकता है ?
यह सारा संसार उस का आश्रम ही तो है !

□

५६ इस से कोई अन्तर नहीं पड़ता कि तुम
उस को बुद्धि द्वारा समझते हो या नहीं।
अधिकतर लोग उसे नहीं समझ सकते।
तुम तो नाम में अडिग विश्वास ही रखो।

□

५७ भगवान दण्ड नहीं देता। वह तो शिक्षा
देता है और सुधारता है।

□

५८ भगवान के विषय में 'अल्प' वा 'अंश' आदि
शब्दों को स्थिति नहीं।

□

५९ उस की अनुभूति ही एक मात्र प्रेम है।

□

६० जिस समय तुम कहते हो, "मैं गुरु हूँ, मैं कर्ता हूं"
तभी तुम अहंकार से बन्ध जाते हो।

□

६१ शरीर और मन (प्रकृति) से आत्मा (पुरुष)
को भोजन नहीं मिलता, अपितु आत्मा से ही
शरीर और मन बल पाते हैं।

६२ खाना, पीना, कामादि भोग तो शरीर के हैं।
तुम मन और शरीर में साम्यता को रखो।

□

६३ किसी भी बात को जबरदस्ती मत ठोंसो।
सब कुछ सहज भाव से होने दो।

□

६४ हम संसार में भगवद रस में विभोर
हो आनन्द आस्वदन के लिए आए हैं।
इस लिए भगवान के ही शिष्य बनो,
संसारिक गुरुओं के नहीं।

□

६५ जब यह भगवान का धंधा करने वाले
भगवान को जान जायेंगे, तो वह धंधे में नहीं रहेंगे।

□

६६ न तो भगवान के पीछे चलो और न उस के आगे।
उस के साथ तो कदम मिला के चलो।

□

६७ मैं तुम से प्यार करता हूं
क्योंकि तुम उस के प्रेमी हो!

६८ जिन्होंने उसे जाना, वही जानने वालों
को पहचानते हैं ।

□

३९ भगवद–अनुमति और भगवद–इच्छा में
बड़ा अन्तर है ।

□

७० भगवान मत मतान्तरों में जकड़ा नहीं ।
वह ईसाइयों, यहूदियों, बुद्धों, मुसलमानों
सिखों, हिन्दुओं को अधिमान नहीं देता ।
वह तो नास्तिक से भी प्रेम करता है
और है उस का भी शुभेच्छ् ।

□

७१ मैं तो उसे ही अपना प्रेमी चाहता हूं ।
जब वह मेरा प्रेमी है तो फिर घटिया
प्रेम पर क्यों टिकें ?

□

७२ मनुष्यों का प्यार अस्थिर है और कमज़ोर भी ।
वह अहंकार से भी आवेशित है।
उस भगवान को स्मरण करो ।
उस का प्रेम चिर–स्थाई है और शुद्ध
भी ।

७३ शास्त्र जब कहता है कि "मैं फिर
आऊंगा" तो इस का अर्थ है कि महक
हमारे हृदय में फिर प्रकट होगी।

□

७४ तुम्हें भगवान की अनुभूति नहीं हो सकती,
वह तो स्वयं अनुभूत होता है
जब तुम्हें कोई कामना नहीं रहती।

□

७५ यदि तुम्हारे हृदय के कपाट खुले हों,
तो महानाम शनैः शनैः प्रेम द्वारा
तुम्हें शुद्ध कर देता है।

□

७६ सन्त अथवा मुनि होने का सम्बन्ध
परमात्मा से नहीं। वह मो केवल
परम्परा को मानना ही है।

□

७७ तुम्हें अपना ज्ञान अपनी अनुभूति से
ही हो सकता है।

□

७८ हमें उस स्थान को प्राप्त करना है, जहां
वेद, गीता व बाईबल न हो। इन से
ऊपर वह परमात्मा ही ऐसा स्थान है
जो सब को सर्वाधिक हितकर है।

□

७९ यदि तुम केवल कुछ क्षणों के लिए भूल
जाओ कि तुम कहां हो और कौन हो तो
तुम्हें याद आ जायेगा कि तुम्हारा
वास्तविक अस्तित्व क्या है।

□

८० अपने जीवन में कितने ही दुःखी हैं
और कितने ही शोक ग्रस्त–जीवन के लिये।

□

८१ वृद्धों के लिए शरीर की मृत्यु स्वाभाविक है।
इस में दखल मत दो। ऐसी मृत्यु से
उन्हें आराम मिलता है।

□

८२ मनुष्य शरीर की प्राप्ति ही एक बड़ा
आनन्द है। परन्तु यह जानकर कि इससे
आगे की राह भगवान की ही है हमारा आनन्द
अतुलनीय और अनुपम हो जाता है।

८३ अच्छे की स्तुति
और
बुरे को निन्दा
से अच्छा है कि भगवान को ढूंढो।

□

८४ जब तुम अपने स्वरूप में स्थित हो
जाते हो तो तुम्हें दिव्य आनन्द की चरम
सीमा की प्राप्ति होती है।

□

८५ हम सब चादरों के समान हैं— कोई लाल है
और कोई नीली और कोई काली। परन्तु
रूई तो सब में समान रूप से विद्यमान है।
ऐसे ही कोई पुरुष सुन्दर है और कोई
कुरूप। कोई पुण्यात्मा है तो कोई दुष्ट।
परन्तु भगवान तो सब में समान रूप से स्थित हैं।

□

८६ जिस किसी ने उसे जान लिया, वह
कभी जीवन से नहीं ऊबता।

□

८७ उसका स्मरण करो और स्वभाव में
रहो, किसी और तरह नहीं।

८८ उस के गुप्त पद चिन्ह, उस की गुप्त
महक और उस का गुप्त गायन—यह
सब तुम्हारे हृदय में है और सब जगह
बाहर भी।

□

८९ यदि तुम उस में–उस की जोत में–मिले
हो तो तुम स्वयं एक मन्दिर हो और
यह संसार एक आश्रम। भगवान के
लिए धन एकत्र करने क्यों घूमते
हो? सब धन उस का ही तो है!
उसे किसी वस्तु मी आवश्कता नहीं।

□

९० यह मन्दिर, गिरजाधर और आश्रम
क्यों? कोई श्रुति इन का विधान नहीं
करती। यह तो दूसरों के श्रम पर
पलने वाले मनुष्यों का धंधा मात्र ही
हैं।

□

९१ प्रत्येक प्राणी अपने कर्मानुसार इस
सत्यानुभूति का भागीदार है।

□

९२ उसे स्मरण करने के लिये हमें अपने को
पूर्णतया भूलना होगा।

९३ यदि तुम उसे स्मरण करते हो, तो तुम्हारे गिर्द रहने वालों के जीवन अधिक अर्थपूर्ण, आनन्दमय और समृद्ध होंगे।

□

९४ हम न तो भगवान का मुकाबिला कर सकते है और न ही उसे चुनौति दे सकते हैं।

□

९५ यह पूछना कोरी मूर्खता है कि आग कैसे जलती है, पानी कैसे प्यास बुझाता है या फिर यह क्यों जम जाता है।

□

९६ जो तुम्हें केवल संयोग अथवा भाग्य प्रतीत होता है, वह वास्तव में भगवान ही है।

□

९७ सत्य ज्ञान यह जानने में है कि तुम एक नाटक के पात्र हो। ऐसा न जानना ही अविद्या अथवा मिथ्या ज्ञान है।

९८ जब तुम्हारे में रहने वाले पुरुष एवं
स्त्री भाव (राधा और कृष्ण, आदम
व हव्वा) आपस में सम-व्यवस्थित होते
हैं तो उन का अस्तित्व नहीं रहता
और वे वृन्दावन अथवा अदन के उपवन
के रुप में परिणत हो जाते हैं।

□

९९ भगवान को ढूंढो,
जीवन यात्रा से बाहर रह कर नहीं
बल्कि जीवन के संघर्ष में।

□

१०० इस संसार में रहने के लिए तप की
आवश्यकता है। उस के लिए नहीं।

□

१०१ जब तक तुम अहंकार नहीं त्यागते
और
मन के साम्राज्य से परे नहीं रहते
तब तक तुम
भगवान की लय में नहीं समा सकते।

१०२ तुम वह ही हो
और
तुम्हारा अस्तित्व उस तक पहुंचने का
मार्ग है।

□

१०३ मनुष्य जादू के करतब दिखा सकता है,
परन्तु चमत्कार तो भगवान ही दिखा
सकता है।

□

१०४ प्रसन्न रहो। तुम्हे कुछ प्राप्त नहीं करना।
जो कुछ है, वह तुम्हारे भीतर ही है।

□

१०५ अपने हृदय में भगवद-नाम ढूंढो और
उसे नित्य जपो।

□

१०६ नाम ही भगवान हैं।
सत्य एक है, भाषा एक है मनुष्य मात्र एक
है।
सत्य, आत्मा, परमात्मा एक है।

१०७ सार रूप से मनुष्य भगवान ही है।
मनुष्य का जन्म अपने अस्तित्व के
प्रत्येक क्षण में प्रेम द्वारा दिव्य आनन्द
के आस्वदन के लिये ही है।

□

१०८ सच्चे जीवन के लिये तुम अपने आत्म-
रूपी स्वभाव में जियो, न कि कामना-
रूप मन के अभाव में।

□

१०९ दादा जी कुछ नहीं,
न कोई एजेन्ट न कोई ठेकेदार।
उस परम सत्य की इच्छा से ही सब
कुछ सम्भव है।

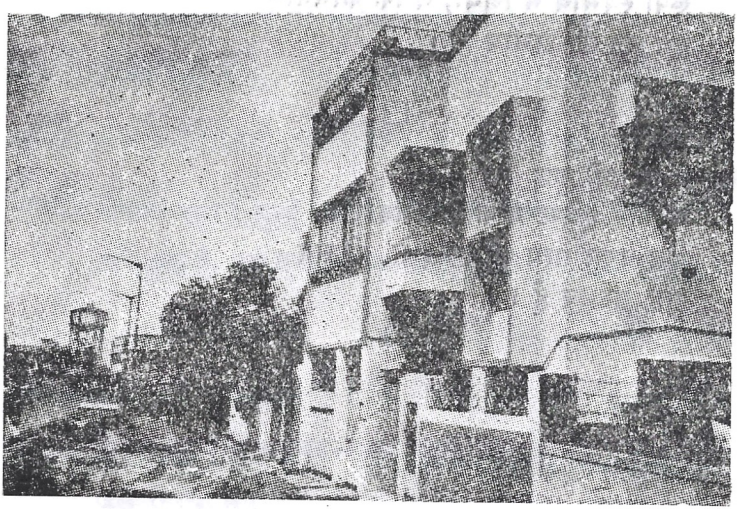

श्री दादा जी का प्रिंस अनवर शाह रोड़ कलकत्ता
स्थित मकान

श्री श्री दादा जी केन्द्र
चण्डीगढ़

चण्डीगढ़ में श्री श्री दादा जी केन्द्र 161, सैक्टर 11-ए में सत्य के पुजारी श्री गुरदयाल सिंह (सेवा-निवृत नैरीबी)* के शुभ निवास पर कार्यशील है। केन्द्र के कार्य को श्री दादा जो के जनवरी 1977 के चण्डीगढ़ आगमन से काफ़ी बढ़ावा मिला। नगर के गण्य मान्य व्यक्तियों (प्रिंसीपल, प्रोफैसर, वकील, उद्योगपति आदि) ने श्री दादा जी से महानाम लिया व श्री दादा जो की उपस्थिति में हुई चमत्कारक घटनाओं को देखा। इस अवसर की एक तस्वीर मुख-पृष्ठ के अन्दर की ओर दी गई है।

केन्द्र को श्री हार्वे फ्रीमैन का स्वागत करने ब उन की दिव्य प्रतिभा से लाभान्वित होने का अवसर भी मिला।

आशा है केन्द्र भविष्य में और अधिक उत्साह से गतिशील होगा।

---

*श्री गुरदयाल सिंह जी व उनकी धर्म पत्नि का द्वितीय आवृति क छपने तक स्वर्गवास हो गया था। कन्द्र उनके सुपुत्र श्री कुलबंत सिंह की कृपा से अब भी कायरत है।

श्री दादा जी से पत्रव्यवहार

श्री दादा जी से पत्र व्यवहार के लिए निम्नलिखित पतों में से किसी पते पर लिखिये।

1. श्री ए. सी. दास गुप्ता,
   209-बी लैन्सडाऊन रोड,
   कलकत्ता-29, भारत।

2. श्री अभि भट्टाचार्य
   डॅलफिन हाऊस,
   कार्टर रोड, बांदरा,
   बम्बई—400050, भारत।
   फोन :—532784

3. श्री जी. टी. कामदार
   कुन्दन कुंज, भाव नगर
   सौराष्ट्र (फोन : 3135)

4. डा० डी. ए. नायक
   त्रिमूर्ति,
   नार्थ साऊथ रोड नं० 2
   जे. बी. पी. डी. स्कीम
   बम्बई—400056, भारत।

   अथवा सीधे

   श्री दादा जी
   श्री अमिय राय चौधरी
   188/10-A, प्रिंस अनवर शाह रोड
   कलकत्ता—70053
   फोन : 468148

श्री दादा जी विषयक साहित्य

अंग्रेज़ी में उपलब्ध साहित्य :

1. Harvey Freeman, "An Introduction to Dadaji" (East-West University, Box 314, Route 1, La Centre, Washington, U.S.A.)
2. Harvey Freeman, "Song of Truth" (Center Books, P. O. Box 42072, Portland OR 97242, U.S.A.)
3. Dhiru Bhai N. Nayak, "Dadaji—the Supreme Scientist" (Published by Gunvantri T. Kamdar, Shivsagar, 106, Walkeshwar Road, Bombay, India)
4. Atulanand Chakrabarti, "Dada Movement" (World Press Private Ltd, 37-A, College Street, Calcutta-700012)
5. On Dada Ji—Part I
6. On Dada Ji—Part II
7. On Dada Ji—Part III
8. On Dada Ji—Part IV

   (Informaiion regarding books "On Dada Ji" may be had from Shri A. C. Dass Gupta, 209-B, Lansdown Road, Calcutta-29, India)
9. On Dada Ji—Vol. V (Editor : Dr. Nanilal Sen (Sri Sri Satyanaryan Bhavan, Bhav Nagar, Saurashtra)
10. On Dada Ji—Vol. VI (Editor : Dr. L.K. Pandit (Sri Sri Satyanaryan Bhawan, Bhav Nagar, Saurashtra)
11. Harvey Freeman, "His Fragrance" (The Centre for Truth, Route 1, La Centre, Washington, U.S.A. 98629)
12. Puri O. P., "At the Lotus Feet of Shri Dadaji" (Available from Sh. C. Anand, 170, Sector 11-A, Chandigarh-160011 India)
13. Dada Upanishad (Sri Sri Satyanarayan Bhavan, Bhav Nagar, Saurashtra

हिन्दी में उपलब्ध साहित्य :

पुरी ओ. पी., "सत्य की महक" (प्राप्ति स्थान : श्री सी. आनन्द 170 सैक्टर 11-ए, चण्डीगढ़—160011 भारत।)

श्री दादा जी

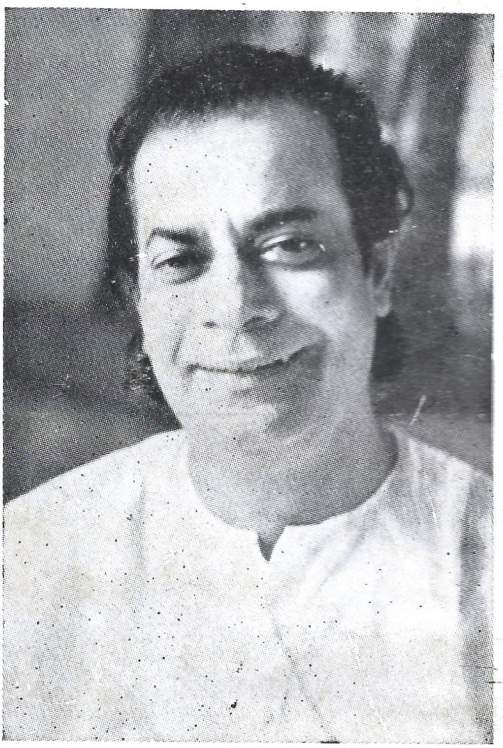

'सत्य की महक' श्री दादा जी की अमृत सूक्तियों का संग्रह है।

श्री दादा जी न कोई स्वामी हैं और न गेरवा वस्त्र-धारी सन्यासी या महन्त। अस्सी वर्ष से ऊपर की आयु में वह एक सद-गृहस्थी के रूप में सुशोभित हैं। उन के बाह्य सादे परिधान के पीछे एक अतुलनीय आत्म-शक्ति निहित है। इस शक्ति के चमत्कारक कार्यों से उन्होंने भौतिकवादी वैज्ञानिकों को अचम्भे में डाल कर विज्ञान की क्षमता पर पुनर्विचार के लिये बाधित कर दिया है।

उन के कथन रीति-रिवाजों से घिरे परम्परागत धर्म में क्रांति के द्योतक है। गुरुडम के कट्टर विरोधी दादा जी महा-नाम द्वारा बिना किसी विचोले के ईश्वर-प्राप्ति का सीधा मार्ग दर्शाते हैं। वह कहते हैं "सच्चे आध्यात्मिक जीवन के लिए तुम अपने आत्म-रुपी स्वभाव में जियो, न कि कामना-रुपी मन के अभाव में। अहम् की दीवार को गिरा कर प्राणीमात्र में आत्मा की एकता को देखो। तब जानोगे कि सब मनुष्य एक हैं। सबकी भाषा एक है और सब का अस्तित्व-रुप परम सत्य एक है"—यह मानवता के लिये दादा जी का सन्देश है।